साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 1
January 2015

चला अकेला

शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

मैं तो चला अकेला
मुरझाई फूलो की कलियाँ
खाली हो गयी है गाँव की गलियां
तु झूले सखियों के संग झूला
मैं तो चला अकेला
लगी चमन मे आग
उजड़ गया दिल का बाग
तेरा तो उपतन है खिला-खिला
मैं तो चला अकेला
चलो नदी मे नाव छोड़कर साहिल
चली गयी तू तोड़कर दिल
पर तू तो है दिलवाला
मैं तो चला अकेला
तेरे तो आए दिन बहार के
भूंल गयी मिलन प्यार के
जनाजा मेरे दिल का निकाला
मैं तो चला अकेला
याद करू मैं वह लम्हा
अपने गाँव का चौराहा
जहाँ तेरा अलग राह निकाला
मैं तो चला अकेला
पल भर मे टूट गया
वर्षो का यह रिस्ता
पलक झपक ही ही
तुने वदल लिया रास्ता
तु भी है क्या खुब मतवाला
मैं तो चला अकेला